REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514
VOLUME - 8 | ISSUE - 9 | JUNE - 2019

गाँधी चिन्तन में सामाजिक रूपांतरण व उसकी तकनीक

महेन्द्र सिंह
सह आचार्य (दर्शनशास्त्र), गौरी देवी राज0महिला महाविद्यालय, अलवर।

मुख्य बिन्दुः– सामाजिक परिवर्तन, आदर्श समाज व्यवस्था, सर्वोदय, गाँधीय तकनीक, सत्याग्रह।

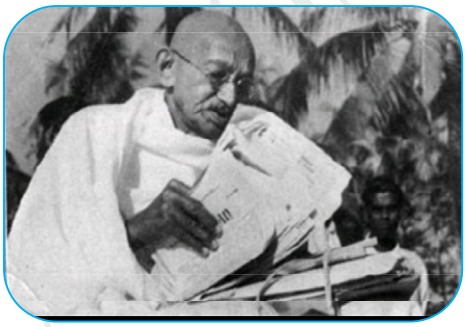

उद्देश्यः प्रस्तुत शोध–पत्र में गाँधी के समाज दर्शन पर प्रकाश डाला गया है। सामाजिक परिवर्तन क्या है? तथा सामाजिक परिवर्तन क्यों आवश्यक है? तथा गाँधी के मत में इस परिवर्तन के मुख्य आधार क्या है? तथा सामाजिक परिवर्तन के लिए गाँधीय तकनीक की प्रासंगिकता का विश्लेषण प्रस्तुत किया जायेगा।

शोध सारांश :–सामाजिक परिवर्तन या रूपान्तरण की विवेचना समाज के उद्भव से आरम्भ होती है। गाँधीजी के अनुसार समाज के निर्माण का आधार नैतिक ही है। जब व्यक्ति अपनी स्वार्थ मूलक प्रवृत्तियों से ऊपर उठता है तभी समाज का आविर्भाव होता है। यदि व्यक्ति स्वार्थमूलक प्रवृत्तियों से प्रेरित होकर ही कार्य करे तो संघर्ष व हिंसा अवश्यम्भावी है और उसी हिंसा से बचने का एक मार्ग समाज–निर्माण है। गाँधी जी कहते है कि समाज का निर्माण हिंसा से बचने के लिए हुआ है। अहिंसा तथा आत्म बलिदान की भावना ही समाज निर्माण के मुख्य नैतिक आधार है।

प्रस्तावनाः–

अपने स्वार्थ के त्याग तथा हिंसा को छोड़ने पर ही सामाजिक निर्माण निर्भर करता है। श्रम–कार्य व्यक्ति को एक–दूसरे से संबंधित करता है तथा सहयोग की भावना को प्रश्रय देता है। मार्क्स भी श्रम–विचार को महत्तव देते हैं किन्तु वे हिंसा व संघर्ष को भी स्वीकारते हैं किन्तु गाँधी के समाज–दर्शन में हिंसा का कोई स्थान नहीं है।

सामाजिक परिवर्तन :–

समाज के किसी भी क्षेत्र में विचलन को सामाजिक परिवर्तन कहा जाता है। सामाजिक – आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक, नैतिक सभी क्षेत्रों में होने वाले किसी भी प्रकार के परिवर्तन को सामाजिक परिवर्तन कहते है। परिवर्तन या तो समाज के समस्त ढाँचें में आ सकता है अथवा किसी विशेष पक्ष तक ही सीमित हो सकता है। परिवर्तन एक सर्वकालीन घटना है तथा किसी न किसी रूप में अनवरत चलने वाली प्रक्रिया है। जब–जब समाज की संरचना व उसके स्वरूप में कोई दोष उत्पन्न होते है तब रूपांतरण या परिवर्तन आवश्यक हो जाता है। यह एक गतिशील प्रक्रिया है जो समय–समय पर होती रहनी चाहिए जिससे सामाजिक दोषों का निराकरण किया जा सके।

गाँधी और सामाजिक परिवर्तनः– एक विकासशील समाज का लक्षण होता है कि वह गत्यात्मक होता है। गाँधीजी ने तात्कालिक समाज में विधमान विभिन्न परम्पराओं पर पुनर्विचार का आग्रह किया तो कुछ नवीन विचारों को आत्मसात करने का विश्वास भी दिखाया भारतीय समाज की जिन विकृतियों के निराकरण का उन्होने प्रयास किया उनमें से अनेक आज भी हमारे समाज में विद्यमान है। अतः उन्हें दूर करने के लिए गाँधी चिन्तन आज भी प्रासंगिक है।

गाँधीजी ने सामाजिक परिवर्तन के विभिन्न तत्वों जैसे जाति, धर्म, वर्ग, भाषा, लिंग, श्रम पर अपने विचार प्रस्तुत किये है तथा इस परिवर्तन को उन्होंने धृणा, निंदा, हिंसा के आधार पर नहीं अपितु सत्याग्रह तकनीक के आधार पर करने का प्रयास किया।

सत्य व अहिंसा ही गाँधी चिन्तन का केन्द्र बिन्दु है व ईश्वर सत्य है से सत्य ईश्वर है को स्थापित कर बताते है कि सत्य ईश्वर से अधिक व्यापक एवं स्वीकार्य है। सत्य के दो रूप निरपेक्ष सत्य व सापेक्ष सत्य है तथा निरपेक्ष सत्य एक आदर्श है जिसकी कभी प्राप्ति नहीं होती है व सदैव अनुकरणीय बना रहता है। हम सापेक्ष सत्य के अनुसार निरपेक्ष का अनुगमन करे और इसके लिए नैतिक साधन अहिंसा को अपनाए। साधन एवं साध्य के एकत्व के कारण सत्य का आग्रह एक प्रकार से अहिंसा का ही आग्रह हो जाता है। इस अहिंसा दृष्टि का व्यावहारिक आधार व्यक्ति द्वारा न केवल अन्य व्यक्ति अपितु संपूर्ण सृष्टि के साथ प्रेमपूर्ण संबंध स्थापित करना है। गाँधी जीवन का सार अहिंसा पर आधारित एक मानव सभ्यता का निर्माण करना है 1931 में लंदन में भारतीय विधार्थियों को संबोधित करते हुए उन्होनें कहा था कि – ''मुझे अपने देशवासियों की पीड़ाओं के निवारण से ज्यादा चिंता मानव प्रकृति के बर्बरीकरण को रोकने की है।''

गाँधीजी एक ऐसी समाज व्यवस्था की कल्पना करते है जिसमें सत्ता के किसी भी रूप का केन्द्रीकरण न हो, क्योंकि यह हिंसक मनोवृत्ति है, उनकी समाज व्यवस्था में आदर्श इकाई स्वावलंबी मनुष्य व आत्मनिर्भर गाँव है। एक अहिंसक व्यक्ति के निर्माण के लिए एकादश व्रतों की धारणा गाँधी जी प्रस्तुत करते है – (सामाजिक रूपांतरण के स्त्रोत)

1.सत्य	2. अहिंसा	3. ब्रहम्चर्य
4.अस्तेय	5.अपरिग्रह	6. शारीरिक श्रम
7. अस्वाद	8.अभय	9. सर्वधर्म समभाव
10.स्वदेशी		

ये व्रत व्यक्तिगत गुण ही नहीं बल्कि सामाजिक गुण भी हैं। इनका जीवन में प्रयोग न केवल व्यक्तिगत रूपातंरण का अपितु सामाजिक रूपांतरण का भी माध्यम बन सकता है। इनमें से किसी भी एक व्रत का स्वीकार स्वयंमेव अन्य व्रतों को समाहित करता है। अहिंसा का आग्रह उन्हें न केवल एक अहिंसक व्यक्तित्व बनाता है अपितु अहिंसा को सामाजिक क्षेत्र में लागू करने को भी प्रेरित करता है।

व्यक्ति और समाज की सम्पन्नता एवं सर्वांगीण विकास हेतु मनुष्य की मूलभूत आवश्यकताओं का निर्धारण कर उसकी पूर्ति हेतु उत्पादक श्रम की अनिवार्यता को स्वीकार किया। सभी के लिए बुनियादी जरूरतों की पूर्ति, शारीरिक श्रम की अनिवार्यता, स्वावलंबन एवं परस्पर सहयोग, कृषि एवं कृषि आधारित उधोगों, हस्तशिल्प एवं कला आधारित अर्थव्यवस्था तथा इन पर आधारित बुनियादी शिक्षा को आधार बनाकर ऐसी समाज व्यवस्था और सामुहिक जीवन पद्धति को प्रस्तुत किया जिसमें व्यक्ति एवं समाज का कल्याण एवं सर्वागीण विकास हो सकें

गाँधी जी के सामाजिक दर्शन के आधार पर विचार है कि स्वराज के रूप में सकारात्मक स्वतंत्रता का अर्थ है व्यक्ति की विशिष्टता को स्वीकार किया जाना, सभी व्यक्ति अलग किन्तु जन्म से समान है। सामाजिक रूपान्तरण में जीवन की अविभाज्यता के कारण इसमें आर्थिक राजनीतिक आदि आयाम स्वतः शामिल हो जाते है। गाँधीजी ने अपने तात्कालिक समाज में तीन महत्तवपूर्ण सामाजिक भेदों को देखा और उनका आजीवन विरोध किया –

1.जाति व्यवस्था
2.मानसिक व शारीरिक श्रम का भेद
3.ग्रामीण – शहरी का भेद।

गाँधीजी का उद्देश्य एक अहिंसक समाज का विकास था उन्होने हर विशेषाधिकार, एकाधिकार का विरोध किया जो किसी भी शोषण, दमन, हिंसा, उत्पीड़न पर आधारित हो। वह जाति व छुआछूत को तीन आधारों पर चुनौती देते है –

1.विवाह
2.खान–पान
3.ऊँच–नीच का क्रम

वे इन तीनों में से किसी एक भी आधार को स्वीकार नही करते और इन प्रतिबधों को समाज के लिए हानिकारक बताते है। विभिन्न वर्गो के लोग अर्न्तवर्णीय विवाह कर सकते है और एक दूसरे के साथ भोजन करें। यह भेदभाव मिटाया जा सकता है। उच्चावच के क्रम की पिरामिडीय व्यवस्था को भी उन्होंने नकार दिया और सागरीय वलय की कल्पना करते है जिसमें सभी मनुष्य समान है। वे कहते है कि छुआछूत हिन्दू समाज पर कलंक है जिस दिन यह समाप्त हो जायेगी सच्चे वर्ण धर्म की स्थापना हो जायेगी। समाज के चारों वर्ग परस्पर पूरक होंगे जिनमें से कोई किसी से श्रेष्ठ या हीन नहीं होगा। वे इस भेदभाव का धार्मिक आधार पर भी खण्डन करते है, वे कहते है कि जो धर्म भेदभाव की शिक्षा देता है मैं उसे अस्वीकार करता हूँ चाहे उसकी व्याख्या कितनी ही विद्वतापूर्ण क्यों न हो। साथ ही गाँधीजी समाज में दृश्यमान छुआछूत को सफाई पेशे से जोड़कर देखने का भी विरोध करते है गाँधी जी इस निम्न समझे जाने वाले कार्य और इसे करने वाले समाज का सम्मान करते है, इसका उद्देश्य श्रमशील समाज का सम्मान करना है। सभी को सफाई कार्य में अनिवार्य रूप से भागीदार बनाना चाहते थे। इसी के साथ वे शारीरिक एवं मानसिक श्रम के बीच की खाई को भी समाप्त करना चाहते थे। हमारी शिक्षा व्यवस्था इस खाई को और चोड़ा करती रही है। बोद्धिक वर्ग द्वारा बहुसंख्यक श्रमप्रधान जनता का तिरस्कार एक अस्वस्थ समाज की निशानी है, अतः वे हर एक व्यक्ति से आशा करते थे कि वे शारीरिक श्रम करे। अपने आदर्श समाज में वह यह कल्पना करते है कि सभी बोद्धिक वर्ग शरीर श्रम करेंगें और इसके जरिए अपनी आजीविका कमाएगें। यदि प्रत्येक व्यक्ति अपनी रोटी के लिए शारीरिक श्रम करे तो इसका अर्थ यह होगा कि कवि, डॉक्टर, वकील अपनी विशेष योग्यताओं का उपयोग मानव सेवा के लिए निःशुल्क करना अपना कर्त्तव्य समझेगें। वह सभी कार्यों हेतु आय की समानता का भी समर्थन करते है जिससे किसी में भी अपने कार्य के प्रति असम्मान की भावना ना उपजे।

इस हेतु गाँधी एक नई शिक्षा व्यवस्था की बात करते हैं जिसे ''नई तालीम'' कहा जाता है। इसमें स्थानीय हस्तकला, शिल्प उधोग की शिक्षा देने का प्रावधान किया गया था। नई तालीम भी श्रम के सहयोग से सामाजिक शोषण एवं अनैतिकता के प्रति सत्याग्रही शिक्षा हो जाती है।

ग्रामीण–शहरी समाज का भेद – गाँधी जी भारतीय समाज के इस भेद पर भी अपने विचार रखते हैं। गाँधीजी विद्यमान गाँवों को सामाजिक पुर्नरचना का आधार बनाते हुए उनमें क्रान्तिकारी बदलाव चाहते है। वे गाँवों में विधमान विभिन्न समस्याओं, अस्वच्छता, छुआछूत, अशिक्षा, बेरोजगारी में व्यापक परिवर्तन चाहते थे। उनकी इच्छा थी कि शहर गाँवों का शोषण बन्द कर दे। अंग्रेजों ने शहरों के माध्यम से भारत का शोषण किया है, जबकि शहरों ने गाँवों का शोषण किया है अतः जरूरी है कि गाँवों का शोषण बंद हो क्योंकि भारत गाँवों में बसता है। इसके लिए गाँधी एक विकेन्द्रीकरण जैसे स्थानीय, स्वदेशी, आर्थिक विचार को प्रस्तुत करते है जो उत्पादन, वितरण एवं स्वामित्व का विकेन्द्रीकरण करता है। चरखा गाँधी के लिए ''स्वावलबंन का प्रतीक है'' व्यक्ति चरखा कातकर स्वयं के लायक कपड़ा बुन सके जिससे आत्मनिर्भरता को बढ़ावा मिलता है। गाँवों का यह सशक्तिकरण एवं विकेन्द्रीकरण उनके राजनीतिक विकेन्द्रीकरण का मार्ग प्रशस्त करेगा। गाँधी जी द्वारा प्रस्तुत व्यवस्था में गाँव केन्द्रीभूत इकाई है अहिंसा पर आधारित समाज गाँवों में बसे ऐसे व्यक्ति समूहों के रूप में ही हो सकता है जिनमें स्वैच्छिक सहयोग, गरिमामय और शान्तिपूर्ण सह अस्तित्व की शर्त हो। स्पष्ट है कि गाँधीजी अपने समय के समाज के साथ एक व्यापक सत्याग्रह करते हैं। वह शोषण के विभिन्न रूपों की आलोचना करते है। एक स्वावलंबी मानव का निर्माण करने हेतु श्रम आधारित आर्थिक राजनीतिक, सामाजिक व्यवस्था बनाने का प्रयास करते है।

गाँधीजी सामाजिक परिवर्तन हेतु रचनात्मक कार्यक्रम भी प्रस्तुत करते हैं जिसके अन्तर्गत कौमी एकता, अस्पृश्यता निवारण, शराबबंदी, खादी, ग्रामोधोग, स्वच्छता, बुनियादी शिक्षा, स्त्रियाँ, आरोग्य शिक्षा, प्रांतीय भाषाएँ, राष्ट्रभाषा, आर्थिक समानता, किसान, मजदूर, आदिवासी, कोढी, विधार्थी इत्यादि के साथ बाद में इसमें पशु सुधार व प्राकृतिक चिकित्सा भी शामिल कर लिये गये।

ये साधारण से प्रतीत होने वाले रचनात्मक कार्यक्रम समाज की पुर्नरचना के आधार थे। रचनात्मक कार्यक्रम के जरिये गाँधीजी भारतीयों को शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक तौर पर नई दिशा की और उन्मुख करना चाहते थे जिससे वे न केवल ब्रिटिश सत्ता से मुक्त हो सके अपितु हिसंक सभ्यता के पाश से भी बचा सके। रचनात्मक कार्यक्रम अहिंसात्मक सिद्धातों पर समाज में बदलाव का एक दृष्टिकोण है जिन सामाजिक समस्याओं से गाँधीजी लडे वे समस्याऐं आज भी हमारे समाज में मौजूद है इसके लिए हमें गाँधी की सत्याग्रह तकनीक को अपनाना होगा जिसका आधार भी सत्य और अहिंसा है।

सामाजिक रूपान्तरण का उद्देश्य सर्वोदयी समाज

गाँधी चिन्तन का केन्द्र सम्पूर्ण समाज का उदय एवं विकास है जिसकी परिकल्पना उन्होने सर्वोदय में अभिव्यक्त की है। सर्वोदय एक जीवन पद्धति तथा एक नये समाज की रचना की दिशा में किया गया प्रयास है। गाँधी साधन, साध्य की पवित्रता में विश्वास करते थे अतः उनके लिए सर्वोदय एक साधन भी है तो एक साध्य भी है। सर्वोदय एक आदर्श है जिसकी प्राप्ति के लिए निरन्तर गतिशील रहना चाहिए। सर्वोदय विचार उपयोगितावाद का विपरीत विचार है, उपयोगितावाद जहाँ अधिकतम व्यक्तियों के अधिकतम सुख व हित की बात करता है तो सर्वोदय सब के उदय (सभी का उदय, कल्याण) की बात करता है तथा सर्वोदय किसी के हानि की बात नहीं करता किन्तु उपयोगितावाद में अल्पसंख्यक की हानि से बहुसंख्यक को लाभ होता है तो वह जायज है। सर्वोदय का आधार ही सुख नहीं प्रेम है तथा इसमें परहित के लिए आत्म–बलिदान भी निहीत है। सर्वोदय का लक्ष्य ही है अंतिम पंक्ति वाले तक का हित। गाँधी कहते है कि सबों में एकत्व या सार्वभौम समरूपता की अनुभूति तो एक आदर्श है इसकी प्राप्ति भले ही न हो किन्तु वह प्रेरणा का आधार तो बन ही सकती है। नैतिक जीवन का महत्तव आदर्श को पा लेने में नहीं बल्कि उसे पाने के सतत प्रयत्न में है। ग्राम्य गणतंत्र इसी का रूपक है। सर्वोदय प्राचीन ग्राम गणराज्य का नूतन और रूपान्तरीत संस्करण है

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया।
सर्वे भद्राणि पश्चन्तु, मा कश्चित् दुःख भागभवेत।।

यही भावना सर्वोदय का मूल मंत्र थी। गाँधीजी ऐसी सामाजिक व्यवस्था की स्थापना चाहते थे जो समाज के नैतिक, धार्मिक, राजनीतिक एवं आर्थिक पुनरूत्थान पर आधारित हो। गाँधीजी ने सर्वोदय का प्रयोग ऐसी जीवन पद्धति के लिए किया जो सत्य व अहिंसा पर आधृत हो और जिसमें सबके शुभ व कल्याण की भावना निहित हो। इस पकार हम देखते हैं कि जब–जब समाज में जड़ता और अगतिशीलता आने लगती है तो वहाँ सामाजिक रूपान्तरण का प्रयास अनिवार्य हो जाता है जिससे समाज में उत्पन्न विकार व दूषित प्रवृत्तियों को दूर कर समाज को सही गति व दिशा दी जा सके।

गाँधी तकनीकः–

समाजिक रूपान्तरण का आधार सत्य व अहिंसा है तथा इसकी क्रियान्विति हमें नीति मार्ग से ही करनी है अतः इस शुभ लक्ष्य की प्राप्ति सत्य का आग्रह कर के ही की जा सकती है। हिंसा मार्ग से प्राप्त लक्ष्य भी हिसंक ही होता है व स्थायी नहीं होता है। गाँधीजी के अनुसार सामाजिक पुर्नर्निमाण का सर्वाधिक महत्तवपूर्ण साधन व्यक्ति का नैतिक अनुशासन ही है और नैतिक सिद्वान्त ही अहिंसक समाज – व्यवस्था का ढांचा निर्मित करते है। यहाँ गाँधी साधन–साध्य की पवित्रता बल देते हैं। क्योंकि जहाँ मार्क्स सामाजिक समानता के लिए वर्गसंघर्ष (हिंसा) को स्वीकारते हैं वहीं गाँधी एकमात्र अस्त्र अहिंसा को अपनाते है जो कि पशुबल (हिंसा) से भिन्न व शक्ति सम्पन्न आत्मबल है। अहिंसा और सत्य एक ही सिक्के के दो पहलू है। सत्याग्रह मेरा विश्वास नहीं है अपितु आचरण का श्रेष्ठ प्रकार है। इसके लिए सत्य, अहिंसा अपरिग्रह, अस्तेय व बहम्चर्य का निष्ठा से

पूर्ण पालन आवश्यक है। अन्तिम चारों व्रत प्रथम के ही अनिवार्य परिणाम है। हमारे आचरण और व्यवहार में मन, वचन व कर्म का पूरा मेल होना चाहिये। सत्याग्रह आत्मशुद्धि करता है, प्रेम पूर्वक कष्ट सहने से आत्मबल में वृद्धि होती है। विरोधी के साथ आध्यात्मिक एकता स्थापित करता है और हृदय परिवर्तन करता है। गाँधी जी कहते है कि आज की जितनी भी सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक व धार्मिक समस्यायें है उन सबका निदान इस सत्यागह तकनीक में निहित है, आज के वैश्विक आतंकवाद, गरीबी, बेरोजगारी, भ्रष्टाचार, सामाजिक अन्याय इत्यादि समस्याओं की कुंजी सत्याग्रह तकनीक में है। सत्याग्रह के विविध साधन है जैसे असहयोग, सविनय अवज्ञा, हिजरत, उपवास, धरना, प्रदर्शन, हड़ताल के द्वारा अन्यायी सरकार व उसके अनैतिक कानूनों का अहिंसक रूप से सत्याग्रह पद्वति का प्रयोग करते हुए विरोध कर शोषक का हृदय परिवर्तन कर सकते है। सत्याग्रही को अभय व निडर होना आवश्यक है क्योंकि सत्याग्रही के लिए शारीरिक बल से मजबूत नहीं अपितु हृदय से निडर व साहसी व्यक्ति का होना आवश्यक है क्योंकि बिना अभय सत्य व्रत का पालन संभव नहीं है।

इस प्रकार हम कह सकते है कि आज के समाज में व्याप्त असमानता तथा भेदभाव का अन्त अहिंसक तरीके से ही संभव है। गाँधी कहते है कि आजकल की बहुत सी सामाजिक बुराइयां मेहनत की रोटी का नियम भंग करने से पैदा होती है। हमें अपनी इच्छाओं पर स्वेच्छापूर्वक रोक लगाना होगा, बुनियादी आध्यात्मिक मूल्यों और यम, नियम को अपनाना सीखना होगा विध्वंशकारी क्षमताओं और प्रवृत्तियों के विपरीत जगत को वैश्विक शान्ति का सन्देश देना होगा। क्षेत्रीय आत्म–निर्भरता की शरण लेकर, फिर से जमीन से जुड़ना होगा, लोगों के मानसिक स्वास्थय की रक्षा के लिए सादा जीवन और आध्यात्मिक मूल्यों का आश्रय लेना होगा, इन्हीं के आधार पर विश्व सुरक्षा और विश्वशांति की प्राप्ति की जा सकती है।

गाँधी जी द्वारा दिये गये आर्थिक, नैतिक, सांस्कृतिक नागरिकता का उद्देश्य साथ ही सर्वोदय समाज की स्थापना जिसके अन्तर्गत श्रम का महत्तव होगा, धन का नहीं स्नेह और सहयोग की भावना होगी, धृणा एवं पृथक्ता नहीं, शोषण के स्थान पर परहित एवं संचय की प्रवृत्ति के स्थान पर त्याग की प्रवृत्ति होगी। वर्तमान में शोषण, धृणा, स्वार्थ सिद्वि जैसी कुधारणा के कारण मारकाट, विनाश तथा मानवता का हनन हो रहा है अतः हम कह सकते है सामाजिक रूपान्तरण का उद्देश्य आज की महती आवश्यकता है।

वर्तमान सामाजिक स्थिति के साथ–साथ धार्मिक स्थिति भी चिंताजनक है। गाँधी जी सदैव धर्म की शिक्षा का विरोध करते थे उन्हें अंदेशा था कि जिन धर्मों की शिक्षा दी जाती है अथवा उनकी शिक्षा का पालन किया जाता है तो वे मेल के स्थान पर झगड़े उत्पन्न करते है साम्प्रदायिक उन्माद फैलाते है, हमारी वर्तमान धार्मिक स्थिति भी ऐसे ही दौर से गुजर रही है जिसकी भी व्यापक समीक्षा की आवश्यकता है।

निष्कर्षः– सामाजिक सुधारों और राजनीतिक कार्यों के अपने प्रयोगों में गाँधी इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि अहिंसा एक अमोध शक्ति है और अगर इसे ढंग से अपनाया जाये तो यह सारी सामाजिक बुराईयों को समाप्त कर एक नये समाज की रचना कर सकती है। सत्याग्रह की व्यापकता इसी से सिद्ध होती है कि गाँधी ने सत्याग्रह के सिद्धान्तों को अपने घरेलू, सामाजिक, आर्थिक व राजनीतिक जीवन में हर कदम पर प्रयोग किया।

संदर्भ सूचीः–

1. गाँधी, एम. के. – प्रार्थना प्रवचन, सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन, नई दिल्ली 1953
2. जोशी, श्रीपाद – गाँधीजी एक झलक, नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद, 1962
3. गाँधीजी, महात्मा – सत्याग्रह इन साऊथ अफ्रीका, नवजीवन पब्लिशिंग हाऊस, अहमदाबाद द्वितीय संस्करण, 1950
4. मजूमदार धीरेन्द्र – सर्वोदय समाज की दिशा में, सर्व सेवा संघ, वाराणसी, 1971
5. प्रकाशन विभाग – सम्पूर्ण गाँधी वांगमय, 78 खण्ड, प्रकाशन विभाग, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली।
6. गाँधी, मोहनदास कर्मचन्द – मेरे सपनों का भारत, नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद, 1955

पत्र–पत्रिकाएँः–

1. यंग इण्डिया, मद्रास
2. गाँधी मार्ग, गाँधी शान्ति प्रतिष्ठान, नई दिल्ली

3. गाँधी स्मृति एवं दर्शन समिति पत्रिका, नई दिल्ली,2001
4. इण्डियन ओपिनियन, डरबन, फीनिक्स, 1903–1914
5. हरिजन जूना, 1933–48

LBP PUBLICATION